हिंदी विभाग,
डी०एस०पी०एम०यू०, रांची
स्नातक प्रतिष्ठा
समसत्र-4

प्रयोजनमूलक हिंदी

(तात्पर्य, स्वरूप, परिभाषा, उपयोगिता, प्रासंगिकता, विशेषता, प्रयुक्तियां एवं दिशाएं)

-डॉ० यशोधरा राठौर

खंड-'ख'

1. **प्रयोजनीयता अथवा उपयुक्तता**- भाषा का सबसे बड़ा गुण, सबसे बड़ी विशेषता उसकी प्रयोजनीयता या उपयुक्तता है। जीवन के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में हिंदी का विशिष्ट रूप विशिष्ट प्रयोजन के अनुसार अनुपयुक्त होता है फिर या तो वह घरेलू आवश्यकता हो अथवा बाजारू। विश्व में बहुत सारी भाषाएं हैं जिनका अस्तित्व साहित्य के क्षेत्र में ही बना हुआ है। आम जीवन और व्यवहार में वे खरे नहीं उतरती परंतु प्रयोजनमूलक हिंदी की यह विशेषता है कि वह आवश्यकतानुसार अपनी उपयुक्तता को प्रमाणित करती है।

2. **वैज्ञानिकता**- हिंदी की भाषा सर्वथा वैज्ञानिक होती है। विज्ञान का संबंध तकनीकी और प्रौद्योगिकी से है। प्रयोजनमूलक हिंदी प्रायोगिक या अनुप्रयुक्त भाषा विज्ञान (अप्लाइड लिंग्विस्टिक) के अंतर्गत एक विशिष्ट अध्ययन का क्षेत्र है जिसके अंतर्गत तर्कसंगत कार्य कारण भाव स्पष्ट रुप से इंगित किए जाते हैं। प्रयोजनमूलक हिंदी के विश्लेषण से इसके व्यवहारिक प्रक्रियाओं से विज्ञान के अध्ययन एवं विश्लेषण की प्रक्रिया अत्याधिक निकटता से देखी और परखी जा सकती है। यही कारण है कि इसकी यह विशेषता अत्यंत ही महत्वपूर्ण है, यह वैज्ञानिक भाषा है।

3. **भाषिक विशिष्टता**- प्रयोजनमूलक हिंदी की तीसरी बड़ी विशेषता है भाषिक विशिष्टता। यह वह विशेषता है जिसके कारण सामान्य साहित्यिक हिंदी और प्रयोजनमूलक हिंदी को अलग-अलग करके

पहचाना जा सकता है। यद्यपि लिपि दोनों की देवनागरी है परंतु भाषिक अवबोध ही हमें बताता है कि कौन सी साहित्यिक हिंदी है और कौन सी प्रयोजनमूलक हिंदी है। भाषा में शब्दावली से ही हम इसके अंतर को जान पाते हैं। अपने शब्द ग्रहण करने की अद्भुत शक्ति के कारण प्रयोजनमूलक हिंदी अनेक भारतीय तथा पश्चिमी भाषा के शब्द भंडार को आवश्यकतानुसार ग्रहण कर अपनी शब्द संपदा को बहुत अधिक समृद्ध कर चुकी है।

4. **तकनीकी एवं पारिभाषिक शब्दावली**–प्रयोजनमूलक हिंदी में तकनीकी एवं पारिभाषिक शब्दावली का प्रयोग अनिवार्य रुप से विद्यमान रहता है जो उसकी भाषिक विशिष्टता को भी रेखांकित करता है।

5. **प्रयुक्तिपरकता**–इसकी पांचवी और महत्वपूर्ण विशेषता है - प्रयुक्तिपरकता अर्थात् प्रयुक्ति भाषा विज्ञान के अंतर्गत जिसे हम रजिस्टर कहते हैं। रजिस्टर के पर्याय के रूप में हमें अपनी विशिष्टता को बताता है। प्रयुक्ति भाषा के प्रयोग का वह प्रकार है जो किसी वक्ता विशेष या लेखक विशेष द्वारा विशिष्ट संदर्भों में प्रयुक्त किया जाता है। अर्थात् भाषा के प्रयोग पर आधारित प्रयुक्ति को ही रजिस्टर कहते हैं। भाषा प्रयुक्ति की प्रथम विशेषता है उसकी पारिभाषिक शब्दावली अर्थात् इसके अंतर्गत ऐसी शब्दावली का प्रयोग होता है जो संदर्भ के अनुसार परिभाषित होता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि प्रयुक्तिपरकता प्रयोजनमूलक हिंदी की पांचवी महत्वपूर्ण विशेषता है।

6. **सामाजिकता**–सामाजिकता की चर्चा किए बिना इसकी विशेषताओं को हम संपूर्णता से नहीं देख सकते। हम सभी जानते हैं कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है इसीलिए भाषा में सामाजिकता तो होती ही है। हिंदी की प्रयोजनमूलक हिंदी मूलत: सामाजिक गुण या विशेषताओं के कारण ही जानी जाती है। सामाजिक नियमों और मान्यताओं के रूप में होने

वाली भाषा प्रयोग को उपयुक्त तरीके से सामाजिकता के संदर्भों में जोड़कर प्रयोजनमूलक हिंदी व्यवहारिक रूप में हमारे समक्ष आती है। प्रयोजनमूलक हिंदी के निर्माण एवं परिचालन का संबंध सीधे सीधे समाज और उससे जुड़ी हुई विभिन्न ज्ञान शाखाओं से है जो विभिन्न परिस्थितियों में विभिन्न प्रकार की शब्दावलियों के साथ सामाजिक सामंजस्य स्थापित करने में सक्षम होती है।

आइए अब हम प्रयोजनमूलक हिंदी की प्रयुक्तियों इसके भाषा रूपों और वर्गीकरण को देखें-

दरअसल प्रयोजनमूलक हिंदी में अपने भाव को ज्यों का त्यों भाषा द्वारा अभिव्यक्त करना एक बहुत ही कठिन काम है। कई बार हम देखते हैं कि किसी विशेष क्रिया को अभिव्यक्त करने के लिए पर्याप्त व सशक्त शब्द ही नहीं मिलते और बात उसी रूप में नहीं रखी जा सकती। तो इस संदर्भ में इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए प्रयोजनमूलक हिंदी की प्रयुक्तियों को प्रयोग के अनुसार, व्यवहार के अनुसार अनेक भागों में विभक्त किया गया है। इस संबंध में भी विद्वानों के अलग-अलग राय हैं परंतु समग्र रूप से जो बात हमारे समक्ष आती है, इसके वर्गीकरण के संबंध में वह यही है कि इसे हम कुल 7 भागों में वर्गीकृत कर सकते हैं-

1. **साहित्यिक प्रयुक्ति**-साहित्यिक हिंदी के बारे में मैंने आपको पहले भी बताया है कि गद्य और पद्य इन दो विधाओं के माध्यम से हम साहित्य की तमाम धाराओं, विधाओं से अवगत होते हैं साहित्यिक हिंदी में जाहिर है इसके सौंदर्यपरक रूपों का जिक्र ज्यादा होता है जिसमें रस, अलंकार, छंद, दोहे समेत तमाम चीजों को हम समाहित करते हैं। साहित्यिक हिंदी प्रबुद्ध हिंदी है जिसे विशिष्ट ज्ञान के द्वारा अर्जित किया जा सकता है। भाषा विज्ञान की यदि हम बात करें तो साहित्यिक हिंदी में कुशलता के साथ भाषा का प्रयोग होता है, विलक्षणता के साथ भाषा का प्रयोग होता

है। सौंदर्यपरक भाषा का प्रयोग होता है जो विभिन्न साहित्यिक विधाओं के माध्यम से हमारे समक्ष आता है।

2. **<u>वाणिज्यिक प्रयुक्ति</u>**- को देखते हैं जिसके अंतर्गत व्यापार से जुड़े हुए, बाजार से जुड़े हुए, लेन-देन से जुड़ी हुई चीजें आती है।

3. **<u>कार्यालयी प्रयुक्ति</u>** -इसके अंतर्गत औपचारिक / अनौपचारिक बातों को खासतौर से पत्र, टिप्पण और कार्यालय में व्यवहार होने वाली तमाम चीजों को समाहित किया जाता है। आज कार्यालय में दिए गए आदेश प्रशासन और शासन की सत्ता की कुंजी है और जाहिर है कि वर्तमान समय में जब हम आंग्लभाषा से परहेज करने लगे हैं तो प्रयोजनमूलक हिंदी ही एकमात्र रास्ता है जिसके माध्यम से औपचारिक / अनौपचारिक कार्यालय की बातें संपन्न की जाती है।

4. **<u>राजभाषा की प्रयुक्ति</u>**-इसके अंतर्गत संपर्क भाषा के रूप में, राजभाषा के रूप में जिस भाषा का हम प्रयोग करते हैं वह है प्रयोजनमूलक हिंदी। प्रयोजनमूलक हिंदी में राजभाषा के तमाम निर्देश, आदेश और प्रशासन तथा सत्ता से जुड़ी हुई चीजें संपर्क भाषा के रूप में आती है और समाज को सचेत, जागरूक, सूचित और संचालित भी करती है।

5. **<u>मीडिया एवं विज्ञापन की प्रयुक्ति</u>**- आज का युग मीडिया और विज्ञापन का युग है। इसमें भी प्रयोजनमूलक हिंदी की बहुत बड़ी भूमिका है। आज हमारे तमाम पत्र दैनिक और साप्ताहिक वार्षिक जितने भी पत्र हैं उसकी भाषा हम देखते हैं कि वह साहित्यिक कम व्यवहारिक ज्यादा होती है और निश्चित रूप से विज्ञापन के युग में मीडिया के युग में ऐसी ही हिंदी सर्वमान्य हो सकती है जो सबके लिए सहज हो, सबको प्रिय हो।

6. **<u>विधि एवं कानूनी भाषा की प्रयुक्ति</u>**- यह वर्गीकरण निहायत ही व्यवहारिक है और आवश्यक है। विधि अर्थात् कानून संबंधी बारीकियां,

कानून संबंधी निविदाएं, तमाम बातें इसके अंतर्गत आती है। कानून संबंधी पुस्तकें, नियमावली, नियमन, आदेश आदि इसके अंतर्गत आते हैं जिसमें प्रयोजनमूलक हिंदी की बहुत बड़ी भूमिका है।

7. **<u>वैज्ञानिक एवं तकनीकी भाषा की प्रयुक्ति</u>-** तमाम इंजीनियरिंग, विज्ञान, मेडिकल सबकी पढ़ाई सबकी अलग-अलग पारिभाषिक शब्दावली है जो प्रयोजनमूलक हिंदी के माध्यम से ही उपलब्ध करवाई जाती है। अगर हम इंजीनियरिंग के छात्र हैं तो इंजीनियरिंग से संबंधित शब्दावली ही हमारे लिए उपयोगी है। यदि हम मेडिकल के छात्र है तो निश्चित रुप से मेडिकल की शब्दावली या पारिभाषिक शब्दावली ही हमारे लिए उपयोगी है। तो इस प्रकार हम देखते हैं इस वर्गीकरण के माध्यम से प्रयोजनमूलक हिंदी के विशाल, सहज और सामाजिक स्वरुप को जो पारिभाषिक शब्दावलियों के माध्यम से हमें, हमारे समाज को, हमारे मीडिया जगत को, हमारे भाषा जगत को, हमारे वाणिज्य को, हमारे साहित्य की धाराओं को प्रभावित करती है।

यहां यह ज्ञातव्य है कि प्रयोजनमूलक हिंदी की कुछ सीमाएं भी हैं। उन सीमाओं के अंतर्गत अभी हमें प्रयोजनमूलक हिंदी के विकास के लिए और भी कुछ करने की जरूरत है। आज भी हमारे समक्ष वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दों की समस्याएं जीवंत हैं। अनुवाद की समस्या से भी हम मुक्त नहीं हो पाए हैं। नई पारिभाषिक शब्दावली का गठन आज भी हमारे लिए एक चुनौती है जिस पर काम करने की जरूरत है। इन सीमाओं के बावजूद प्रयोजनमूलक हिंदी हमारे सेवा माध्यम एवं जीविकोपार्जन का सबसे बड़ा साधन है। सामान्य भाषा का व्यवहार क्षेत्र जहां विशाल एवं व्यापक है वहीं प्रयोजनमूलक हिंदी का क्षेत्र संकुचित और सीमित है जिसे हम व्यवहारिक क्षेत्र भी कह सकते हैं। अपने सपाट अभिव्यक्ति के माध्यम से प्रयोजनमूलक हिंदी सेवा माध्यम (सर्विस टूल्स) का अनुपम साधन है। यह सरल सुबोध और जनसाधारण के द्वारा प्रयोग की भाषा है जिसका महत्व असंदिग्ध है। हमारे संपूर्ण साहित्य जगत में भाषा के स्वरुप को नकारकर हम अपनी प्रगति के मार्ग को बाधित कर सकते हैं। सच

पूछें तो प्रयोजनमूलक हिंदी आज जीवन के विभिन्न उतार-चढ़ाव और मानवीय जीवन मूल्यों को, रिश्तों को समझने में बिल्कुल सक्षम है और जीवन के तमाम शर्तों पर यह खरी उतरती है। इसकी प्रासंगिकता आज भी बनी हुई है।

-डॉ० यशोधरा राठौर
स. प्राध्यापिका
हिंदी विभाग
डी०एस०पी०एम०यू०, रांची